INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2019; 1(1): 19-21
Received: 14-05-2019
Accepted: 18-06-2019

अमित कुमार
M. Phil, P.G.T., (History)
DSSSB, Delhi, India

Corresponding Author:
अमित कुमार
M. Phil, P.G.T., (History)
DSSSB, Delhi, India

रामायण की ऐतिहासिक विश्व व्यापकता

अमित कुमार

प्रस्तावना

रामायण भारतीय संस्कृति का मूल स्त्रोत माना जाता है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर सैंकड़ों वर्ष से लोग ग्रन्थ लिखते आ रहे हैं, फिर भी अघाते नहीं हैं। यह ग्रन्थ भारत की विभिन्न भाषाओं के अलावा विश्व की कई भाषाओं में लिखा गया है। साहित्यिक रचनाओं का उपजीव्य ढूढ़ने के लिए रामायण आज भी समस्त भारतीय भाषाओं के लिए अक्षयकोष है। इसके साथ ही रामायण हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना का निर्विकल्प आश्रय भी है। रामायण के अनुशीलन मात्र से ईश्वर के प्रति श्रद्धा और प्रेम का उदय होता है, भक्ति उत्पन्न होती है। अंतःकरण शुद्ध होता है। इसलिए यह एक विलक्षण और चिरंजीवी ग्रन्थ है। साहित्यिक दृष्टि से भी यह विश्व साहित्य की अनमोल रचना है। इस पर धारावहिक और अनेक चलचित्रों एवं फिल्मों का भी निर्माण हो चुका है। विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। रामायण में तत्कालीन समाज के रीतिरिवाजों और शासन पद्धति का वर्णन किया गया है। शाश्वत मूल्यों के विकास में रामायण की महत्ता आज भी उतनी है जितनी प्राचीन काल में थी। रामायण की रचना मानव के जीवन के सर्वांगीण विकास और शाश्वत जीवन–मूल्यों को प्रेरित करने के उद्देश्य से की गई है। जैसे–भातृ–प्रेम, त्याग, सत्य, प्रतिज्ञा–पालन, आज्ञा–पालन आदि।

रामायण एक विश्व साहित्य का आदि काव्य है। रामायण का समय त्रेतायुग का माना जाता है। भारतीय कालगणना के अनुसार समय को चार युगों में बाँटा गया है–सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग एवं कलियुग। एक कलियुग 4,32,000 वर्ष का, द्वापर युग 8,64,000 वर्ष का, त्रेतायुग 12,96,000 वर्ष का तथा सतयुग 17,28,000 वर्ष का होता है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम 8,70,000 वर्ष सिद्ध होता है। बहुत से विद्वान इसका तातपर्य इसा पूर्व 8000 से लगाते हैं जो आधारहीन है। अन्य विद्वान इसे इससे भी पुराना मानते हैं।

करूणार्दचित्त महर्षि वाल्मीकि के मानस सागर से निसृत रामायण रूपी ज्ञान गंगा में मानवीय सभ्यता के सभी पक्षों का चित्रण इसमें समाविष्ट है इस ज्ञान विज्ञान की सरिता में अवगाहन कर कोई भी सभ्यता अपनी, आत्मिक, बौद्धिक एवं मानसिक मलिनता को दूर कर सकता है। किसी समुदाय या समाज में उठने–बैठने तथा रहने योग्य मनुष्य को सभ्य कहा जाता है उसी के भाव को सभ्यता कहा जाता है। सभ्यता हमारे बाहरी रहन–सहन, खान–पान, आचरण, भौतिक विकास, पारिवारिक, सामाजिक संस्कार आदि का परिचायक होता है। संस्कृति हमारी आंतरिक सोच ज्ञान विज्ञान आदि प्रेरक तत्व को बताती है। वैसे आंतरिक ही बाहरी आचरण का कारण होता है। रामायण मानव सभ्यता के विकास में परम सहयोगी है तथा सदा सर्वदा रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान और विचार के अनुरूप ही आचरण करता है और जैसे करता है वैसा ही बन जाता है, जीवन का यही सूत्र है। महर्षि वाल्मीकि ने रामचरित् मानस के माध्यम से मानव जीवन या मानव सभ्यता के विकास में अपेक्षित सभी गुणों की आवश्यकताओं की चर्चा की है, जिसकी विश्व के प्रत्येक सभ्यता को सदा आवश्यकता रहेगी। रामायण में वर्णित रामराज्य की सभी प्रजा वेदज्ञ थी ज्ञान सम्पन्न शूरवीर संसार के कल्याण में सलंग्न तथा समस्त मानवीय गुणों जैसे दया, सत्यपरता, पवित्रता, उदारता आदि से युक्त थे। समाज में सभी वर्ण एक दूसरे के सहयोग करते हुए रहते थे, जाति भेद या वर्ण भेद की दूषित भावना नहीं थी तथा सभी को समान अधिकार तथा न्याय प्राप्त होता था। रामायण एक ऐसे सभ्य समाज के निर्माण का संदेश देता है जिस समाज में धार्मिक न्याय प्रिय राजाओं के सुशासन में सम्पूर्ण समाज धन धान्य युक्त हो। सभी गौ आदि पशुओं से समृद्ध, अश्वादि आशुगामी वाहनों से युक्त तथा कोई भी निर्धन नहीं हो। आधुनिक सभ्यता में हम लोग अंध विकास में आगे दोड़ रहे हैं जहाँ सम्पूर्ण विश्व विकास के नाम पर विनाश की तरफ बढ़ रहा है। औद्योगिक विकास द्वारा यान वाहनों के प्रदूषण से प्रकृति को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। रामायण के अनुसार धन धान्य–समृद्धि का मूल गौमाता है।

रामायण की विश्व–व्यापकता तो उस समय से बन चुकी थी जब 19वीं सदी में लाखों निर्धन भारतीय विशेष रूप से अवध एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के निवासी रोजी–रोटी की खोज में सुदूर

फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुयाना, सूरीनाम, जमैका आदि देशों में पंहुचे और अपने साथ तुलसीदासकृत रामायण ले गए, जो हर संकट और संघर्ष में उनका संबल और सहयोगी बनी।

प्रवासी भारतीयों की दूसरी धारा भी पूर्व और पश्चिम के अनेक देशों में गई, जो अपेक्षाकृत नवीन है–विशेषरूप से 20वीं सदी की और उसमें भी 1947 के भारत विभाजन के बाद की। गत शताब्दी में ही विभाजन से पूर्व लाखों की संख्या में दक्षिण भारतीय और गुजराती क्रमशः मलाया, बर्मा, श्रीलंका और अफ्रीकी देशों में फैल चुके थे। ब्रिटेन और अमेरिका में भारतीयों का प्रवास लगभग इसी शताब्दी का है। इन भारतीयों के साथ भी रामायण की धारा विश्व के कोने–कोने में फैली, जिसका माध्यम चाहे रामचरित् मानस रहा हो अथवा वाल्मीकि रामायण या कंबन रामायण आदि।

रामायण की तीसरी या अत्यंत सशक्त धारा पूर्व और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में गई, जो इन देशों की संस्कृति की अभिन्न अंग बनकर छा गई। चीन में भी जातक कथाओं के माध्यम से यह धारा पहुँच गई। इस धारा का प्रभाव इतना शक्तिशाली था कि वहां के कवियों ने अपने देशों की भाषाओं में रामायणें रचीं और उनमें स्थानीय रंग भर दिए। इस धारा का और अधिक प्रवाह यह हुआ कि इन देशों में रामायण में वर्णित नगरों, नदियों, व्यक्तियों आदि के नाम रखे जाने लगे। फलस्वरूप कालान्तर में स्थानीय लोग यह मानने लगे कि रामायण की घटनाएँ उनके देश में घटित हुई। इन रामायणों में घटनाओं के निर्वाह में भले ही अनेक अंतर हों, किन्तु स्त्रोत वाल्मीकि रामायण ही मानी जाती है। कुछ रामायणों में विभिन्न प्रसंगों का निर्वाह रामकथा के विद्वानों अथवा विज्ञ पाठकों को हास्यापद भी लग सकता है। यहाँ की रामायण धर्म और अध्यात्म से अछूती है, किन्तु संस्कृति से पूरी तरह जुड़ी हैं। इसलिए भारत के अतिरिक्त एशियाई देशों की रामायण धारा को हम सांस्कृतिक धारा कह सकते हैं।

रामायण की इस धारा की कुछ झलक दक्षिण–पूर्व एशिया में भी मिलती है और सच बात यह है कि विश्व के इसी भाग ने राम और उनके देश को भली–भांति समझा भी तथा उनकी महत्ता भी स्वीकार की। थाईलैंड के सामाजिक और सांस्कृतिक तथा धार्मिक जीवन में राम पूर्णतः समरस हैं। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इस देश में कहीं–कहीं राम और बुद्ध के बीच कोई प्रथकता की रेखा नहीं है। यहाँ के जीवन में दोनों का सह–अस्तित्व है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण बैंकाक स्थित शाही बुद्ध मंदिर है, जिसमें नीलम की मूर्ति है। यह मंदिर पूरे देश में प्रसिद्ध है तथा दूर–दूर से लोग इसके दर्शनार्थ आते हैं। मंदिर की दीवारों पर संपूर्ण रामकथा चित्रित है। इस देश की अपनी रामायण है–रामकियेन, जिसके रचयिता नरेश राम प्रथम थे। उन्हीं के वंश के नरेश राम नवम् वर्तनाम में देश के शासक हैं। थाईलैंड में राम के दर्शन एक स्थान पर उनके भव्य रूप में होते हैं और वह स्थान है बैंकाक स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय। इस संग्रहालय में जैसे ही आप प्रवेश करेगें धनुर्धारी राम के दर्शन होगें। अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि थाईलैंड में एक अयोध्या भी है और एक लवपूरी भी। अयोध्या स्थित एक अधीक्षिका ने कहा था कि थाईवासियों का विश्वास है कि रामायण की घटनाएँ उनके देश में ही घटीं। थाई जीवन में राम की लोकप्रियता की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसके प्रमाण यहाँ के शास्त्रीय नृत्य हैं, जिनमें रामकथा के दर्जनों प्रसंग प्रदर्शित किए जाते हैं। वे नृत्य आज भी थाईलैंड में लोकप्रिय हैं।

कम्बोडिया में राम के महत्त्व का जीता–जागता सबूत है अंगकोरवाट, जो दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा प्रतीक है। यहाँ बुद्ध, शिव, विष्णु, राम आदि सभी भारतीय देवों की मूर्तियाँ पाई जाती हैं। इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में सूर्यवर्मन द्वितीय ने करवाया था। इस मंदिर में कई भाग हैं–अंगकोरवाट, अंगकोर थाम, बेयोन आदि। अंगकोरवाट में रामकथा के अनेक प्रसंग दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। जैसे सीता की अग्नि–परीक्षा, अशोक वाटिका में रामदूत हनुमान का आगमन, लंका में राम–रावण युद्ध, वालि–सुग्रीव युद्ध आदि यहाँ की रामायण का नाम रामकेर है, जो थाई रामायण से बहुत मिलती जुलती है। इसी प्रकार लाओस और बर्मा आदि बौद्ध देशों के जीवन में भी रामकथा का महत्त्व है, जो नृत्य नाटकों और छायाचित्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। यहाँ के बौद्ध मंदिरों में इनके प्रदर्शन होते हैं।

और यहाँ इंडोनेशिया में भी चाहे वालि का हिन्दु हो या जावा–सुमात्रा का मुसलमान, दोनों ही राम को अपना राष्ट्रीय महापुरूष और राम साहित्य तथा राम संबंधी ऐतिहासिक अवशेषों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर समझते है। जोगजाकार्ता से लगभग 15 मील की दूरी पर स्थित प्राम्बनन का मंदिर इस बात का साक्षी है, जिसकी प्रस्तर भित्तियों पर सम्पूर्ण रामकथा उत्कीर्ण है। वालि में रामलीला या रामकथा से संबंधित नृत्य–नाटिकाओं की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, इस द्वीप का वातावरण पूर्णत्तया संस्कृतिमय है। इंडोनेशिया की प्रसिद्ध रामायण का नाम रामायण काकविन है। मलेशिया में रामायण मनोरंजन का अच्छा माध्यम है। यहाँ चमड़े की पुतलियों द्वारा रात्रि में रामायण के प्रसंग दिखाए जाते हैं। इस देश की रामायण का नाम हेकायत सेरीरामा है जिसमें राम को विष्णु का अवतार माना गया है। यद्यपि इस पर इस्लाम का प्रभाव भी स्पष्ट है। सिंहल द्वीप में कवि नरेश कुमार दास ने छठी शताब्दी में जानकी हरण काव्य की रचना की थी। यह संस्कृत ग्रन्थ है। बाद में इसका सिंहली भाषा में अनुवाद हुआ। आधुनिक काल में जॉन डीसिल्वा ने रामायण का रूपान्तर किया। देवभाषा संस्कृत को पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों में स्थान मिलने के कारण वाल्मीकि रामायण से इनका परिचय शताब्दियों पूर्व हो गया था किंतु तुलसीदास कृत रामायण 'रामचरित् मानस' के प्रति पश्चिमी देशों का रूझान आश्चर्यजनक रूप से मुख्यतः गत शताब्दी से ही शुरू हुआ है, जिसका अनुवाद अभी तक लगभग सभी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में हो गया है और अभी हो रहा है। फ्रांसीसी विद्वान गासां दतासी ने 1839 में रामचरित् मानस के सुंदर कांड का अनुवाद किया। फ्रांसीसी भाषा में मानस के अनुवाद की धारा पेरिस विश्वविद्यालय के श्रीवादि विल्न ने आगे बढ़ाई।अंग्रेजी में तुलसीदास कृत रामायण का पद्यानुवाद पादरी एटकिंस ने किया जो बहुत लोकप्रिय है। इसका प्रकाशन हिंदुस्तान टाइम्स में देवदास गांधी ने करवाया था। इसी प्रकार के अनुवाद जर्मनी, सोवियत संघ आदि में हुए। रूसी भाषा में रामचरित् मानस का अनुवाद करके अलेक्साई वारान्निकोव ने भारत–रूस की सांस्कृतिक मैत्री की सबसे शक्तिशाली आधार शिला रखी। उनकी समाधि पर रामचरित् मानस की अर्द्धाली 'भलो भलाहिह पै लहै' लिखी है, जो उनके गांव कापोरोव में स्थित है। यह सेंट पीटसबर्ग के उत्तर में है। चीन में वाल्मीकि रामायण और रामचरित् मानस दोनों का पद्यानुवाद हो चुका है।

शोध–ग्रंथ के माध्यम से भी पश्चिमी देशों में यह धारा आगे बढ़ी है। माना जाता है कि हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम इटली निवासी डॉ. टेसीटोरी ने लिखा और फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में 1910 में उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि दी गई, विषय था–मानस और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन। दूसरा शोध–ग्रंथ लंदन विश्वविद्यालय में 1918 में जे.एन. कार्पेण्टर ने प्रस्तुत किया, विषय था–थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास।

संतोष का विषय है कि रामायण की यह विश्वव्यापी भूमिका प्रकाश में आने लगी है और इसमें अनेक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक धाराओं के साथ अंतराष्ट्रीय रामायण सम्मेलनों की एक धारा की भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके अंतर्गत अब तक 12 देशों में 17 से ज्यादा रामायण सम्मेलन हो चुके हैं। भारत से शुरू होकर कई विश्व–परिक्रमाएं कर चुकी यह सम्मेलन श्रृंखला एक विश्व सांस्कृतिक मंच के रूप में उभर कर सामने आई है।

विगत कुछ समय से विश्व के कुछ देशों में लोकतंत्र के असंतुलित होते जा रहे स्वरूप को लेकर बुद्धिजीवी वर्ग की चिन्ता बढ़ी हुई है। रामायण कालीन भारत में लोक–स्पंदन का जीवन था, अब सत्ता के दंड का संचरण है और लोक में विलय की सांस्कृतिक अर्थों में व्याख्या रामायण में राम द्वारा अपनाए गए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'सर्वभूतः हितेरताः' जैसे लोकतंत्र के आधार स्तम्भ नियम हैं जिन नियमों को श्री राम ने राजा होते हुए भी निभाया। यदि आज ऐसी लोकतंत्र की अवधारणा को आत्मसात कर लिया जाए तो संभवतः आज हम विश्व में सर्वाधिक खुशहाल और संपन्न लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गए होते।
इस बात में कोई संदेह नहीं है कि विश्व मानचित्र के लगभग दो–तिहाई हिस्से को रामायण ने अनेक स्तरो पर और अनेक रूपों में प्रभावित किया है। आज भी मिस्त्र और रोम से लेकर वियतनाम, कम्बोडिया और यहाँ इंडोनेशिया तक रामायण संस्कृति का व्यापक प्रभाव देख जा सकता है वैश्विक जनमानस को जिस कथा ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वह रामायण ही है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि सदियों गुजर जाने के बाद भी रामायण वैश्विक सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। इसकी विश्व व्यापकता अपने आप में कहीं न कहीं इस बात की ओर इशारा करती है कि रामायण हमारी सभ्यता, जीवन और संस्कृति का आधार स्तम्भ ही है। जिस प्रकार रामायण के सारे चरित्र अपने अपने धर्म का पालन करते हैं। वैसे ही इन चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है या ये कहा जाए कि रामायण का अनुसरण करते हुए ही आज की समस्त समस्याओं से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं अन्य कोई उपाय नहीं है।

संदर्भ–सूची

1. पोद्दार वासुदेव : रामायण महभारत काल इतिहास सिद्धान्त, 2006, पृ.स. 48,
2. प्रसाद आर.सी. : रामचरित् मानस, पृ.स. 18–25,
3. चाइल्डहुड डी. : पृ.स. 186
4. मनोहर श्याम : लोक महाकाव्य–लोरिकायन, पृ.स. 32
5. मिश्र विश्वनाथ प्रसाद : बिहारी की वाग्विभूति, पृ.स. 118